International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939

हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द का योगदान

प्रदीप देशवाल
मकान न0 383, पुराना हाऊंसिग
बोर्ड कालोनी, रोहतक

प्रेमचन्द का जन्म 1880 ई0 में वाराणसी के निकट लमही ग्राम में हुआ था। 'प्रेमचंद' उनका उपनाम था, उनका असली नाम धनपतराय था। बचपन से ही वे कृषक जीवन और निम्न–मध्य वर्ग के जीवन संघर्ष से परिचित हो गए थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू माध्यम से हुई।

प्रेमचन्द जब आठ वर्ष के थे, तो उनकी माता जी का देहान्त हो गया था। इस घटना ने उनका जीवन–संघर्ष बढ़ा दिया। वे बचपन से ही अध्ययनशील थे। 1910 में उन्होंने इण्टर की परीक्षा पास की थी। स्नातक की उपाधि उन्होंने 1919 में ग्रहण की। 1930 ई0 में उन्होंने 'हंस' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। प्रेमचन्द की मृत्यु सन् 1936 में काशी में हुई।[1]

प्रेमचन्द हिन्दी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक है। इन्हें नवाबराय और मुंशी प्रेमचन्द के नाम से भी जाना जाता है। इनकी रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। ये सर्वप्रथम उपन्यासकार थे जिन्होंने उपन्यास साहित्य को तिलस्मी और ऐयारी से बाहर निकालकर उसे वास्तविक भूमि पर ला खड़ा किया।[2]

प्रेमचन्द जी का कथा–साहित्य इतना विस्तृत है कि उसमें भारतीय जीवन का कोई भी अंश नहीं छूटा है। उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रत्येक पात्र को शामिल किया है। उनकी रचनाओं में ज्यादातर पात्र मालिक, मजदूर, जमींदार तथा किसान है। उनकी रचनाओं में सामाजिक समस्याओं को उठाया गया है। उन्होंने पूस की रात, स्वामिनी, अलग्योझा, झाँकी, माँ, बेटो वाली विधवा, शान्ति, नशा, ठाकुर का कुँआ आदि अनेक ग्राम्य जीवन पर आधारित कहानियाँ लिखी है।[3] उन्होंने गोदान, गबन, प्रतिज्ञा, निर्मला, हम खुरमा, सेवासदन, हमसवाब, कायाकल्प, रंगभूमि व कर्मभूमि आदि प्रसिद्ध उपन्यास लिखे है। उपन्यासों के अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी में रतननाथ 'सरशार' के 'फिसाना–ए–आजाद' के विशेष स्थलों का हिन्दी में 'आजाद कथा' के नाम से अनुवाद किया।

आधुनिक कथा–साहित्य का प्रारम्भ प्रेमचन्द जी के 'प्रेमाश्रम' और 'सेवा सदन' से प्रारम्भ होता है। 'प्रेमाश्रम' और 'सेवासदन' दोनों में सामाजिक दोषों के सुधारों की चर्चा है। 'सेवासदन' में जैसे समाज की समस्या का अन्त सेवासदन के निर्माण से हुआ है, उसी प्रकार 'प्रेमाश्रम' के द्वारा किसानों की दुखस्था का अन्त कराया गया है। उनकी वाणी में क्रान्ति की चेतना थी। उन्होंने सभी वर्गों के मनुष्यों

के चित्रण और सभी स्थितियों के वर्णनों में कथा–रस का ऐसा विकास किया है कि पाठक तन्मय हो जाते हैं। उनकी कथाओं में हमारे ही घरों के चित्र अंकित हुए हैं और उनकी समस्याएँ हम लोगों की ही समस्याएँ है। उनमें मानव–जीवन की सभी दुर्बलताएँ है।[4]

डॉ0 नगेन्द्र उनके बारे में लिखते हैं –

1. प्रथमत् उन्होंने हिन्दी कथा साहित्य को मनोरंजन के स्तर से उठाकर जीवन के साथ सार्थक रूप से जोड़ने का काम किया चारो और फैल हुए जीवन और अनेक सामयिक समस्याओं ने उन्हें उपन्यास लेखन के लिए प्रेरित किया।[5]

   प्रेमचन्द जी का जन्म दरिद्रता में हुआ और दरिद्रता में ही उनका अन्त हो गया। इसलिए वे आम आदमी को पीड़ा को समझते है। उन्होंने आम आदमी की पीड़ा को अपने कहानियों व उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। वे धार्मिक आण्डम्बरों को ढोग मानते थे। वे मानवता को सबसे बड़ी वस्तु मानते थे। उन्होंने अपने कहानी व उपन्यासों के माध्यम से भारत के आदर्शो को भी प्रस्तुत किया है। वे समाज में सभी को एकसमान देखना चाहते थे। वे चाहते थे कि समाज में लोगो के साथ किसी तरह का भेदभाव ना हो सभी मिल–जुलकर रहे। इसलिए उन्होंने अपने साहित्य में समाज की बुराईयों को मुख्य रूप से उजागर किया है।

1936 में लखनऊ में एक अधिवेशन में भाषण देते हुए प्रेमचन्द जी ने कहा था "साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है– उसका दरजा इतना न गिराइए। वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं है, बल्कि आगे मसाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।"[6]

प्रेमचन्द जी के समय स्वतंत्रता संग्राम के कारण देश की सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक परिस्थितियाँ ठीक नहीं थी। शोषण व शोषित के बीच खाई बढ़ती जा रही थी। उन्होंने अपने उपन्यासों में विधवाविवाह, वेश्यावृति, पूंजीवादी शोषण, किसानों की समस्या तथा आर्थिक असमानता व नशे को अपनी कहानी का कथानक बनाया। उनकी रचनाओं में जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण हुआ है। 'सुनीता', 'त्यागपत्र', शेखर : एक जीवनी; 'बाणभट्ट की आत्मकथा' 'गिरती दीवारें', 'बलचनमा', मैला आँचल', 'परती : परिकथा', 'बूंद और समुद्र', 'सागर लहरें और मनुष्य', 'जहाज का पंछी', 'दिव्या', 'वैशाली की नगरवधू', 'चित्रलेखा', 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'बहती गंगा', 'चांदनी के खंडहर', 'उखड़े हुए लोग', 'कब तक पुकाऊँ', 'झूठा सच' इत्यादि प्रेमचन्दोत्तर – उपन्यास की विकास–यात्रा की अत्यधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ है, जिन पर किसी भी साहित्य को गौरव तथा सन्तोष हो सकता है।[7]

प्रेमचन्द जी की महानता का एक दूसरा मापदण्ड भी है। किसी भी साहित्य में ऐसे भी कलाकार होते है, जो अपनी प्रतिभा और अपनी कला के द्वारा अपनी भाषा और साहित्य का मस्तक दूसरी भाषा और साहित्य के सामने ऊँचा करते है। प्रेमचन्द जी ने हिन्दी साहित्य को गौरवान्वित किया है, क्योंकि

जिन लेखकों और कवियों के कारण हिन्दी साहित्य का प्रचार हुआ है और इनका मान बढ़ा है। उनमें प्रेमचन्द जी का स्थान प्रथम पंक्ति में है।[8] उन्होंने न केवल कहानी व उपन्यास लिखे है बल्कि अनेक नाटक जीवनियाँ तथा बाल रचनाएँ भी की है। इनके साथ–2 प्रेमचन्द जी ने अनेक विख्यात लेखकों यथा–जार्ज इलियट, टालस्टाय, गाल्सवर्दी आदि कहानियों के अनुवाद भी किए है।[9]

इस दृष्टि से प्रेमचन्द जी का स्थान हिन्दी साहित्यकारों में सर्वश्रेष्ठ है। उन्होंने हिन्दी कहानी को एक नई पहचान व जीवन दिया। उनको आधुनिक कथा साहित्य का जन्मदाता कहा जाता है। उनको कथा सम्राट की उपाधि दी गई। उन्हें कमल का सिपाही, उपन्यास सम्राट व कथा सम्राट आदि नामों से जाना जाता है। उन्होंने ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा का आसन ग्रहण करने योग्य बनाया है।

संदर्भ

1. डॉ0 सुमन जैन, संक्षिप्त गबन, प्रेमचन्द, पृ0 5
2. www.wikipedia.com
3. प्रेमचन्द, ग्राम्य जीवन की कहानियाँ, पृ0 187
4. शचीरानी गुर्दू, प्रेमचन्द : व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ0 94–96
5. डॉ0 नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0
6. raj-bhasa-hindi :blogspot.in
7. रामदीन गुप्त, प्रेमचन्द और गांधीवाद, पृ0 2
8. शचीरानी गुर्दू, प्रेमचन्द और कृतित्व, पृ0 128–129
9. www.wikipedia.com